वन्दना

शरण में आए हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन।
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन।।
न हममें बल है, न हममें बुद्वि, न हममें साधन न हममें शक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन।।
जो खिल सके न वो फूल हम हैं, तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
तुम्हारे दर के हैं हम पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन।।
प्रदान कर दो महान शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान शक्ति।
तभी कहाओगे पापहारी, दया करो हे दयालु भगवन।।
जो तुम पिता हो तो मैं हूँ बालक, जो तुम गुरू हो तो मैं हूँ सेवक।
जो तुम हो ठाकुर तो मैं पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन।।
सुना है हम अंश हैं तुम्हारे, तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे।
कृपा की दृष्टि सदा ही रखना, दया करो हे दयालु भगवन।।
भले जो हैं तो हैं हम तुम्हारे, बुरे जो हैं तो भी हैं तुम्हारे।
कृपा की दृष्टि बनाए रखना, दया करो हे दयालु भगवन।।
तुम्ही हो माता पिता तुम्हीं हो, तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हों।
तुम्हीं हो साथी, तुम्ही सहारे, तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे,
दया की दृष्टि सदा ही रखना, दया करो हे दयालु भगवन।।

सर्वग्रह शान्ति के लिए

सूर्य

6	1	8
7	5	3
2	9	4

चन्द्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5

मंगल

8	3	10
9	7	5
4	11	6

बुद्ध

9	4	11
10	8	6
5	12	7

ब

10	5	12
11	9	7
6	13	8

शुक्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9

शनि

12	7	14
13	11	9
8	15	10

राहु

13	8	15
14	12	10
9	16	11

केतु

14	9	16
15	13	11
10	17	12

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी,
भानु, शशी, भूमि सुतो बुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः, शनि, राहु केतवः,
सर्वे ग्रहः शान्ति करः भवन्तु।।

अनुरोध

प्रिय पाठकगण,

यह पवित्र पुस्तक हमारा प्रथम संस्करण है जोकि आप सभी को पूर्णतया निःशुल्क वितरित किया गया है। अगले अंक के लिए आपके सुझाव आमंन्त्रित है। विज्ञापन दाताओं से अनुरोध है कि वे अपने विज्ञापन देने हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें।

चित्राँश कम्प्यूटर इन्स्टीट्यूट
स्लीपर रोड, सी.बी. गंज, बरेली
फोन नं०:- 9897111313, 9319929796

यदि आप चित्राँश आरती संग्रह के लकी ड्रा में भाग लेना चाहते है तो निम्न कूपन भरकर दिनांक 30 जून, 2010 तक चित्राँश कम्प्यूटर इन्स्टीट्यूट पर अवश्य जमा करें। लकी ड्रा विजेता को एक आकर्षक पुरस्कार दिया जायेगा।

लकी ड्रा कूपन

नाम.....
पिता/पति का नाम.....
आयु.....**फोन नं०**.....
पता.....
.....

लकी ड्रा कूपन की छाया प्रति मान्य नहीं होगी। तथा संस्था का निर्णय ही अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।

आरती श्री सांई बाबा की

आरती उतारें हम तुम्हारी सांईं बाबा।
चरणों के तेरे हम पूजारी सांईं बाबा।

विद्या, बल, बुद्धि, बन्धु माता पिता हो,
तन मन धन प्राण, तुम ही सखा हो,
हे जगदाता अवतारे, सांई बाबा।
आरती उतारे हम तुम्हार सांई बाबा।।

ब्रह्मा के सगुण अवतार तुम स्वामी,
ज्ञानी दयावान प्रभु अंतरयामी,
सुन लो विनती हमारी सांई बाबा।
आरती उतारें हम तुम्हारी सांई बाबा।।

आदि हो अनन्त त्रिगुणात्मक मूर्ति,
सिंधु करूणा के हो उऋारक मूर्ति,
शिरडी के संत चमत्कारी सांई बाबा।
आरती उतारें हम तुम्हारी सांई बाबा।।

भक्तों की खातिर, जनम लिए तुम,
प्रेम ज्ञान सत्य स्नेह, मरम दिए तुम,
दुखिया जनों के हितकारी सांई बाबा।
आरती उतारें हम तुम्हारी सांई बाबा।।

आरती श्री विश्वकर्मा जी की

जय श्री विश्वकर्मा प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।
सकल सृष्टि के कर्ता, रक्षक स्तुती धर्मा।।
आदि सृष्टि में विधि को श्रुति उपदेष दिया।
जीव मात्र का जग में ज्ञान विकास किया।।
ऋषि अंगिरा तप से शांति नहीं पाई।
रोग ग्रस्त राजा ने जब आश्रय लीना।
संकट मोचन बनकर दूर दुःख कीना।।
जय श्री विश्वकर्मा
जब रथकार दम्पति तुम्हारी टेर करी।
सुनकर दीन प्रार्थना विपत हरी सगरी।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
द्विभुज चतुर्भज, दशभुज सकल रूप साजे।।
ध्यान धरे तब पद का, सकल सिद्धिआवे।
मन द्विविधा मिट जावे, अटल शक्ति पावे।।
श्री विष्वकर्मा की आरती जो कोई गावे।
भजत गजानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे।।
जय श्री विश्वकर्मा

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करे सेवा।।
जय गणेश.....
एक दन्त दयावन्त चार भुजाधारी।
माथे सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी।।
जय गणेश.....
अन्धन को आँख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।।
जय गणेश.....
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करे सेवा।।
हार चढ़ें फल चढ़ें और चढ़ें मेवा।
जय गणेश.....
दीनन की लाज रखो, शम्भु पुत्र वारी।
मनोरथ को पूरा करो, जय बलिहारी।।
जय गणेश.....

आरती श्री गायत्री माता की

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता,
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जगपालन करतीं,
दुःख षोक भय क्लेश कलह दारिद्र दैन्य हरती। जयति जय .....

बह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी जगत धात्रि अम्बे,
भवभयहारी-जनहितकारी, सुखदा जगदम्बे,
भयहारिणी भवतारिणी अन्घे अज आनन्द राषि,
अविकारी अघहरी अविचलित अमले अविनाषी। जयति जय ....

कामधेनु सतचित आनन्दा, जय गंगा गीता,
सविता की शाष्वती शक्ति तुम सावित्री सीता। जयति जय .....

ऋग यजु साम अथर्व प्रणयिनी प्रणव महामहिमे,
कुण्डलीनि सहस्रार सुषुमना शोभा गुण गरिमे। जयति जय .....

स्वाहा स्वधा शची ब्रह्माणी राधा रूद्राणी,
जय सतरूपा वाणी विद्या कमला कल्याणी। जयति जय .....

जननी हम हैं दीन हीन दुःख दारिद के घेरे,
यद्यपि कुटिल कपटी कपूत तउ बालक हैं तेरे। जयति जय .....

स्नेहसनी करूणामयी माता चरण शरण दीजे,
बिलख रहे हम शिशुसुत तेरी दया दृष्टि कीजै। जयति जय .....

कामक्रोध मदलोभ दम्भ दुर्भाव द्वेश हरिए,
शुद्ध बुद्धि, निश्पाप, हृदय मन को पवित्र करिए। जयति जय ....

तुम समर्थ सब भांति तारिणी तुष्टि पुष्टि त्राता,
सतमारग पर हमें चलाओं जो है सुख दाता। जयति जय .....

आरती श्री शिव जी की

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा।
ब्रहमा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा।।
ॐ जय शिव ओंकारा।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजे।
ॐ जय शिव ओंकारा।।

दो भुज चार चतुर्भुज, दश भुज ते सोहे।
तीनो रूप निरखता, त्रिभुवन मन मोहे।।
ॐ जय शिव ओंकारा।।

अक्षमाला, वन माला, मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद सोहे, भोले शुभकारी।।
ॐ जय शिव ओंकारा।।

श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगें।
सनकादिक, ब्रहमादिक, प्रेतादिक संगे।।
ॐ जय शिव ओंकारा।।

कर के बीच कमण्डल, चक्र त्रिशूल धर्ता।
जग कर्ता जगहर्ता, जग पालनकर्ता।।
ॐ जय शिव ओंकारा।।

ब्रहमा, विष्णु, सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, तीनों ही एका।।
ॐ जय शिव ओंकारा।।

त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई जन गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे।
ॐ जय शिव ओंकारा।।

आरती श्री सरस्वती माता की

आरती करूं सरस्वती मातु, हमारी हो भव भयहारी हो।
हंस वाहन पदमासन तेरा, शुभ वस्त्र अनुपम है तेरा।
रावण का मन कैसे फेरा, वर मांगत बन गया सवेरा।
यह सब कृपा तिहारी हो, उपकारी हो मातु हमारी हो।
तमो ज्ञान नाशक तुम रवि हो, हम अंबुजन विकास करती हो।
मंगल भवन मातु सरस्वती हो, बहुकूकन बाचाल करती हो।
विद्यावती वीणाधारी हो, मातु हमारी हो।
तुम्हारी कृपा गणनायक, लायक विष्णु भए जग के पालक।
अंबा कहायी सृष्टि ही कारण, भए शंभु संसार की घालक।
बन्दों आदि भवानी जग, सुखकारी हो, मातु हमारी हो।
सद्बुद्धि विद्याबल मोही दीजै, तुम अज्ञान हटा रख लीजै।
जन्मभूमि हित अर्पण कीजै, कर्मवीर भस्महिं कर दीजै।
यही विनय हमारी, भव भय हारी हो, मातु हमारी हो।।

आरती श्री अम्बे जी की

ॐ जय अम्बे गौरी मैय्या जय श्यामा गौरी।
तुमको निसदिन ध्यावत, हर ब्रह्मा शिवरी। ॐ जय.....
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्जवल से दोउ नैनो, चन्द्रवदन नीको।। ॐ जय.....
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्तपुश्प गलमाला, कण्ठन पर साजे।। ॐ जय.....
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुरनर मुनिजन सेवत तिनके दुःखहारी।। ॐ जय.....
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती,
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।। ॐ जय.....
शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर-घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती।। ॐ जय.....
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।। ॐ जय.....
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम बखानी, तुम शिवपटरानी।। ॐ जय.....
चौसठ योगिनि मंगल गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू।। ॐ जय.....
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता।। ॐ जय.....
भुजा चार अतिशोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवाँछित फल पावत, सेवत नर-नारी।। ॐ जय.....
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति।। ॐ जय.....
श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नित गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख-सम्पति पावै।। ॐ जय.....

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्री रामचन्द्र पालु भजु मन हरण भवभय दारूणम।
नव कन्ज लोचन कन्ज मुखकर कन्ज पद कन्जारूणम्।
कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरद सुन्दरम्।
पतपीट मानहुं तड़ित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्।।
भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनंदकंद कौशल चन्द्र दशरथ नन्दनम्।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज सर चापधर संग्राम जित खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदयकन्ज निवास कर कामादिखलदलगन्जमनम्।।

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग दोष जाके निकट न झांके।।
अंजनि पुत्र महा बल दाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाए। लंका जारि सिया सुधि लाए।।
लंका सो कोटि समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। लाय सजीवन प्राण उबारे।।
पैठि पाताल तोरि जम-कारे। अहिरावण की भुजा उखारे।।
बायैं भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संत जन तारे।।
सुर-नर मुनि जन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।।
कंचन थाल कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै।।
लंका विध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास स्वामी आरती गाई।।

आरती श्री चित्रगुप्त जी की

ॐ जय चित्रगुप्त हरे, स्वामी जय चित्रगुप्त हरे।
भक्त जनों के इच्छित फल को पूर्ण करे।। ॐ जय .....
विघ्न विनाशक मंगलकर्ता, सन्तन सुखदाई।
भक्तन के प्रतिपालक, त्रिभुवन यश छाई।। ॐ जय .....
रूप चतुर्भुज, श्यामल मूरति, पीताम्बर साजे।
मातु इरावति दक्षिणा, खाम अंग साजे।। ॐ जय .....
कष्ट निवारण, दुष्ट संहारण प्रभु अन्तर्यामी।
सृष्टि सम्हारन, जन दुःख हारन प्रकट हुए स्वामी।। ॐ जय .....
कलम, दवात, तलवार, पत्रिका, कर में अति सोहे।
वैजन्ती वनमाला त्रिभुवन मन मोह।। ॐ जय .....
सिंहासन का कार्य सम्हाला, ब्रह्मा हरषाये।
तैंतीस कोटि देवता, वरणन मे धाये।। ॐ जय .....
नृपति सौबास, भीष्म पितामह याद तुम्हे कीना।
वेगि बिलम्ब न लायो, इच्छित फल दीन्हा।। ॐ जय .....
वारा सुत, भगिनी सब स्वास्थ्य के कर्ता।
जाऊँ कहाँ शरण, मे तु तज में भर्ता।। ॐ जय .....
बन्धु पिता तुम स्वमी, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी।। ॐ जय .....
जो जन चित्रगुप्त जी की आरती निश दिन नित गावे।
चौरासी के छूटे बन्धन इच्छित फल पावे।। ॐ जय .....
न्यायाधीश बैकुण्ठ निवासी, पाप पुण्य लिखते।
हम है शरण तिहारी, आस न दूजी करते।। ॐ जय .....

आरती श्री काली माता की

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े,
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट करे।
सुन जगदम्बे कर न विलम्बे सन्तन के भण्डार भरे,
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।।

बुद्धि-विधाता तू जगमाता, मेरा कारज सिद्ध करे,
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन पड़े।
जब जब भीड़ पड़े भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे,
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।।

बार-बार तैं सब जग मोह्यो, तरूणी रूप अनूप धरे,
माता होकर पुत्र खिलावें, कहीं भार्या बन भोग करे।
संतन सुखदायी, सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे,
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश फल लिए, भेंट देन सब द्वार खड़े,
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र धरे।
वार शनिचर कुमकुमवरणी, जब लुंकड़ पर हुक्म करे,
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।।

खड्ग खप्पर त्रिशूल हाथ लिए, रक्तबीज कूँ भस्म करे,
शुम्भ निशुम्भ क्षणहीं में मारे, महिषासुर को पकड़ धरे।
आदित वारी आदि भवानी, जन अपने का कष्ट हरे,
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।।

कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे,
जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर टरे।
सौम्य स्वरूप धरयो मेरी माता, जन की अर्ज कुबूल करे,
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।।

सात बार की महिमा बरनी, सब गुण कौन बखान करे,
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भुवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्धि साधक तेरी भेंट धरें,
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।।

ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारें, शिवशंकर हरि ध्यान धरे,
इन्द्र विष्णु तेरी करें आरती, चंबर कुबेर डुलाय रहे।
जय जननी जय मातु भवानी, सचल भुवन में राज करे,
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।।

आरती श्री दुर्गा जी की

अम्बे तू है जबदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गाएँ भारती, ओ मैय्या हम सब उतारें तेरी आरती।।
अम्बे तू .....
तेरे जगत के भक्त जनन पर भीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।।
सौ सौ सिंहों से तू बलशाली, अष्ट भुजाओं वाली।
दुष्टों को तू ही संहारती।। ओ मैय्या हम .....
माँ बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता। मैय्या .....
पूत कपूत सुनें हैं पर न माता सुनी कुमाता।
सब पर अमृत बरसाने वाली, सबको हरषाने वाली।।
नैया भँवर से उबारती।। औ मैय्या हम .....
नहीं माँगते धन और दौलत ना चाँदी ना सोना। मैय्या .....

आरती श्री कुंज बिहारी जी की

आरती कुंज बिहारी की, श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की।
गले में वैजन्ती माला, बजावें मुरली मधुर बाला।
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नन्द के आनन्द नन्दलाला।।
गगन सम अंग कान्ति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े वनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चन्द सी झलक।। ललित छवि श्यामा प्यारी की।
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की.....
कनकमय मोर मुकुट बिलसै, देवता दर्शन को तरसे।
गगन सों सुमन रासि बरसै। बजै मुरचंग, मधुर मिरदंग,
ग्वालिनि संग, लाल रवि गोपकुमारी की।
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की.....
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, कलुश कलि हारिणी श्री गंगा।
स्मरन ते होत मोह भंगा, बसी सिव सीस,
जटा के बीच, हरै अघ कीच। चरन छावि श्री बनवारी की ।।
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की.....
चमकती उज्जवल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू।
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू, टेर सुन दीन भिखारी की।
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की.....

हम तो माँगें माँ तेरे मन में एक छोटा सा कोना।
सब पे करूणा बरसाने वाली, विपदा मिटाने वाली।
दुःखियों के दुःख को तू टारती। औ मैय्या हम .....
चौदस के दिन तेरे भवन में भीड़ लगी है भारी। मैय्या .....
जो कोई माँगें सो फल पावे, कोई न जावे खाली।
सबकी झोली भरने वाली, माँगी मुरादों वाली।।
दुःखियों के दुःख को निवारती। औ मैय्या हम.....
हम पापी माँ अधम अनाड़ी, अपने सुत की करना रक्षा।
तेरा ही गुण गान करे माँ, माँगें प्रेम की भिक्षा।
मैय्या साहस दिलाने वाली, मार्ग दरशाने वाली।।
संकट से तू ही तो निकालती।। औ मैय्या हम .....
मन मंदिर में गूँज रहा है आज तेरा जयकारा।
हम दुःखियों का तुझ बिन मैय्या होगा कौन सहारा।
मैय्या रूप दिखाने वाली, शक्ति जताने वाली।
दुःखियों के दुःख को तू टारती।। औ मैय्या हम .....
बीच भँवर में आन पड़ी नैय्या।
तुम बिन हमको नहीं मिलेगा दूजा और खिवैया।
मैय्या संकट मिटाने वाली, बिगड़ी बनाने वाली।।
नैय्या को तू ही तो उतारती।। औ मैय्या हम .....
तुम हो मेरी इष्टाध्यायी, पिता गुरू और माता।
तुम ही मेरी सब कुछ हो, तुम्हें छोंड़ कहाँ मैं जाता।
दुर्गा सिंह सवारी वाली, काली कलकत्ते वाली।।
धारण तू ही है धारती।। औ मैय्या हम .....
यह छोटा सा परिवार हमारा इसे बनाए रखना।
इस बगिया में सदा खुशी के फूल खिलाए रखना।
मैय्या कृपा दर्शाने वाली, भक्ति दिलाने वाली।।
भक्तों के सब दुःख निहारती।। औ मैय्या हम .....

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैय्या जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसदिन सेवत हर विष्णु विधाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता।।

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जगमाता।
सूर्य चन्द्र माँ ध्यावत, नारद ऋषि गाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता।।

दुर्गा रूप रंजनि, सुख सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि धन पाता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता।।

तुम पाताल निवासिनि, तुम शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की दाता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता।।

जिस घर तुम रहती तहँ, सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता।।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता।
ॐ जय लक्ष्मी माता।।

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता,
रत्न चर्तुदश तुम बिन, कोई नहीं पाता।
ॐ जय लक्ष्मी माता।।

महा लक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता।।

आरती श्री विष्णु जी की

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।।
ॐ जय जगदीश हरे.....

जो ध्यावे फल पावे, दु:ख बिनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।
ॐ जय जगदीश हरे.....

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किसकी।।
ॐ जय जगदीश हरे.....

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतरयामी।
पारब्रहम परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।।
ॐ जय जगदीश हरे.....

तुम करूणा के सागर तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख खलकामी, कृपा करो भर्ता।।
ॐ जय जगदीश हरे.....

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति।।
ॐ जय जगदीश हरे.....

दीन-बन्धु दु:खहर्ता, तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ उठाओ, शरण पड़ा तेरे।।
ॐ जय जगदीश हरे.....

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।
ॐ जय जगदीश हरे.....

तन मन धन सब है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा।।
ओ३म् जय जगदीश हरे.....

आरती श्री तुलसी माता की

जय जय तुलसी माता

सब जग की सुखदाता वर दाता। जय जय .....
सब योगों के ऊपर, सब रोगों के ऊपर।।
रूज से रक्षा करके भव त्राता।
जय जय तुलसी माता....

बटु पुत्री हे श्यामा सुर बल्ली हे ग्राम्या,
विष्णु प्रियो जे तुमको सेवे सो नर तर जाता।।
जय जय तुलसी माता....

हरि के शीश विराजत त्रिभुवन से हो वंदित।
पतित जनों की तारिणी तुम को विख्याता।।
जय जय तुलसी माता....

लेकर जन्म विजन में आई दिव्य भवन में।
मानव लोक तुम्हीं हो सुख सम्पत्ति दाता।।
जय जय तुलसी माता....

हरि को तुम अति प्यारी श्याम वरण कुमारी।
प्रेम अजब है उनका तुमसे है कैसा नाता।।
जय जय तुलसी माता....